आला हज़रत का तज़्किरए दिल नवाज़ क़ुरान,हदीस और मैथ की रौशनी में खुतबाते शफ़ीकी जिल्द दोम का एक मुन्फ़रिद बयान बनाम

आला हज़रत का चर्चा रहेगा

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफीअ् मुहम्मद शफीक़ ख़ान अत्तारी मदनी, फतेहपुरी

मक्तबा :- दारुस्सुन्नाह , दिल्ली

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْقِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

आला हज़रत का तज़्किरए दिल नवाज़ कुरआन, हदीस और मैथ की रौशनी में

खुतबाते शफ़ीकी जिल्द दोम का एक मुन्फ़रिद बयान बनाम

आला हज़रत का चर्चा रहेगा

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

दुरूद शरीफ की अनोखी फ़ज़ीलत
बादशाहों के मकबरों का हाल
मुहब्बत और तारीफ में फ़र्क़
आला हज़रत के पास सब कुछ है
सोने का निराला अंदाज़
हर वक़्त नबी की तारीफ़
तआरुफे आला हज़रत का तआरुफ
वलियों के तज़्किरे क्यों बाक़ी रहते हैं?
तज़्किरे बाक़ी रहने के चंद अस्बाब
9 के अदद की चार अजीब बातें
बरगाहे मुस्तफा की मशीन
फ़ना फिर्रसूल होने की दलील
मीलाद में बैठने का अंदाज़
आला हज़रत की मन्क़बत

खतीब

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

नाम मुहम्मद शफीक़ खान,वालिद का नाम मुहम्मद शरीफ खान है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अत्तारिया में शैखे तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिए दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी रज़वी से 2004 ईसवी में बैअ़त होने की वजह से अपने नाम के साथ अ़त्तारी लिखते है, आपकी विलादत क़स्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा,सूबा यू पी हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश 10 जून 1986 ईसवी है।

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सिन 2000 ईस्वी में ऐ. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर 4 साल क़ियाम किया फिर 2004 ईस्वी में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा’वते इस्लामी का दीनी माहौल मिला दा’वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ कोर्सेज़ किये और 2006 ईस्वी में अपने ही इलाके के दारुल उ़लूम बनाम जामिया अ़रबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में क़ारी इक़बाल अह़मद अ़त्तारी से क़ुरआ़ने पाक नाज़िरा और ह़ज़रत मौलाना अ़तीक़ुर्रह़मान मिस्बाही से दर्से निज़ामी के दरजा ए ऊला और कुछ दरजा ए सानिया की किताबें पढ़ीं इसके बाद मज़ीद ता’लीम हासिल करने के लिये चिरैयाकोट जिला मऊ तशरीफ ले गये और वहां दरजा ए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इ़ल्मी इदारे अल जामिअ़तुल अशरफिया मुबारकपुर आ’ज़मगढ़ में मतलूबा दरजा ए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से कामयाब होने के बाद दरजा ए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की फिर दरजा ए राबिआ दारुल उ़लूम ग़ौसिया (जो जिला आ’ज़मगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ़ है) में मुकम्मल की फिर उसके बाद दा’वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने अ़त्तार नेपालगंज,नेपाल में दाखिला लिया और दरजा ए खामिसा से दौरए ह़दीस तक की ता’लीम वहीं मुकम्मल फरमाई,2014 में फराग़त के बाद तदरीस के लिये दा’वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर,आगरा तशरीफ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा’वते इस्लामी के मदनी

मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअ़तुल मदीना तशरीफ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआ़त के दरजा ए सानिया में चलने वाली इ़ल्मे सर्फ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह़ शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजा ए राबिआ़ में चलने वाली इ़ल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह़ अश शफीकुन नोअमानी तसनीफ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजा ए सानिया में चलने वाली ह़दीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविया की उर्दू शरह़ शफ़ीकिया तह़रीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफात का सिल्सिला जारी है।आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल35 किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

अल्लाह पाक से दुआ़ है कि मौसूफ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फे क़बूलियत अ़ता करके मौसूफ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ :- अल आजिज़ मुह़म्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

आला हज़रत का चर्चा रहेगा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله   وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ الله

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الله   وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا نُوْرَ الله

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ऐ आशिकाने रसूल!आज मै आपके सामने दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत में ऐसी हदीस पाक बयान करने लगा हूँ जिसको आपने बारहा सुना होगा,लेकिन उस के पीछे जो राज़ पोशीदा है उस के बारे में शायद ही आपका ख़्याल गया होगा।

हाफ़िज़ मुहम्मद शर्फ़ुद्दीन अब्दुल मुअमिन बिन खलफ दमयाती رحمۃ اللہ علیہ ने अपनी किताब में मुस्नद अहमद बिन हम्बल के हवाले से इस हदीसे पाक को नक़्ल फरमाया है चुनांचे:

हज़रते अबू तल्हा अंसारी رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि एक मर्तबा सुब्ह के वक़्त अल्लाह के आखिरी नबी صلی اللہ علیہ والہ وسلم के चेहरे पर ख़ुशी की निशानी ज़ाहिर थी, सहाबए किराम ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ والہ وسلم आज आप बहुत ख़ुश नज़र आ रहे हैं ? फ़रमाया: मेरे पास मेरे रब की तरफ़ से एक आने वाला आया और मुझ से अर्ज़ किया कि आप का जो उम्मती आप पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह पाक उस के लिए दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा और उस के दस दर्जात बुलंद फ़रमाएगा और उस पर उतनी ही रहमत भेजेगा। (مسند احمد، حدیث ابی طلحۃ، رقم ۱۶۴۵۲،ج۵، ص۵۰۹)

ऐ आशिक़ाने रज़ा! इस हदीसे पाक से पता चला कि अल्लाह पाक दुरूदे पाक पढ़ने वाले को चार चीज़ें अता फ़रमाता है:

(1)--- उस के लिए दस नेकियां लिखेगा यानी उस को दस नेकियां मिलेंगी।

(2)--- दस गुनाह जो उसने गुज़रे हुए ज़माने में किए मिटा देगा यानी माफ़ हो जाऐंगे।

(3)--- और उस के दस दर्जात बुलंद फ़रमाएगा यानी जन्नत में उस के दस दर्जात बुलंद होंगे।

(4)--- अल्लाह पाक दुरूद पढ़ने वाले पर उतनी ही यानी दस रहमतें भेजेगा।

येह राज़ पोशीदा है

दुरूदे पाक की इस फ़ज़ीलत में जो राज़ पोशीदा है वह येह है कि इस हदीस में सबसे पहले नेकियों के मिलने,फिर गुनाहों के मिटाए जाने,फिर दर्जात के बुलंद होने को क्यों बयान फ़रमाया? यानी येह तर्तीब ही क्यों?इस का उल्टा क्यों नहीं?कि पहले गुनाह के मिटने को बयान किया जाता फिर नेकियों के मिलने और आख़िर में दर्जात की बुलंदी को बयान किया जाता, या पहले दर्जात की बुलंदी,फिर गुनाहों के मिटने और आख़िर में नेकियों के मिलने का तज़्किरा किया जाता,मगर इस तर्तीब को छोड़ कर पहले नेकियों के मिलने,फिर गुनाहों के मिटने और इस के बाद में दर्जात के बुलंद होने को बयान किया गया है। इस को आसान लफ़्ज़ों में यूं समझिए कि पहले मौजूदा ज़माने में मिलने और फिर गुज़रे हुए ज़माने में किए हुए गुनाहों की भरपाई,और फिर आने वाले ज़माने में दर्जात की बुलंदी की बात की गई है।

सवाल येह है

अब सवाल येह है कि इस्लाम के जहां हर फ़रमान में बेशुमार हिक्मतें छुपी होती हैं,तो इस फ़रमान में कौन सी हिक्मत छुपी है?

येह था सवाल,अब इस का जवाब सुनिए कि इस में क्या हिक्मत और क्या राज़ है? ऐ आशिक़ाने रज़ा इस में बहुत बड़ी हिक्मत छुपी है,और येह हिक्मत इन्सानी हालत के मुताबिक़, उस की नफ़सियात के मुताबिक़,और अक़्लो शुऊर के मुताबिक़ और मुवाफ़िक़ है,और इस हिक्मत से येह भी पता चलेगा कि हमारे नबी صلی اللہ علیہ والہ وسلم को मुआशरे के बारे में मुकम्मल इल्म है,और उनका एक एक फ़रमान ज़िंदगी देने वाला और अमल करने के लाइक़ है।

इन्सान की हालत और आदत

इस हिक्मत को समझने के लिए पहले इन्सान की हालत और आदत को समझना पड़ेगा,और वह येह कि एक शख़्स जो कि बड़ा मालदार था,जिसके पास बेशुमार दौलत थी,और वह बड़े आलीशान महल्लात और बेशुमार जायदाद का मालिक था, जिनसे ऐशो आराम ख़ूब झलक रहा था, हर वक़्त दरवाज़े पर नौकरों का झुरमुट रहता था।

सब कुछ जाता रहा

मगर यकायक फ़ना का बादल गरजा, आफ़तो मुसीबत की आंधी चली और दुनिया में देर तक ख़ुशहाल रहने की उम्मीदें ख़ाक में मिल कर रह गईं, खुशियों और शादमानियों से हंसते बस्ते घर को तबाही ने आ लिया,वक़्त की मार ऐसी पड़ी कि उस से येह सारी चीज़ें जाती रहीं,और रौशनियों से जगमगाते कुसूर यानी महल्लात से घुप अँधेरी झोपड़ी में मुंतक़िल यानी पहुँच गया। कल तक अहलो इयाल यानी घर वालों की रौनक़ों में शादाँ और मसरूर यानी खुश था मगर आज लकड़ी की वहशत नाक यानी डरावनी छोपड़ी और तन्हाइयों में मग़मूमो रंजूर यानी गम्ज़दा है, यूं कह लीजिए कि कल का करोड़ पति आज का रोड पति बन गया,यहां तक कि एक वक़्त का खाना,और जिस्म छुपाने के लिए कपड़ा तक ना रहा,बिल्कुल कंगालो ख़स्ता हाल हो गया। भूक और प्यास से बेताब है,जिस्म नंगा है।

अब इस को किस चीज़ की फ़िक्र होगी

अब आप बताईए क्या उस को अपने (past)यानी गुज़रे हुए ज़माने की फ़िक्र होगी? (future) यानी आने वाले ज़माने की फ़िक्र होगी? नहीं ना, वह तो सोचेगा कि मेरा (past) यानी गुज़रा हुआ ज़माना दुरुस्त हो या ना हो,मेरा (future) यानी आने वाला ज़माना सही हो या ना हो,मेरा सिर्फ (present) यानी मौजूदा हाल सही हो जाये,मुझे अभी कुछ खाने,पीने को मिल जाये जिससे मैं अपनी जान बचा सकूँ,कोई कपड़ा मिल जाये जिससे मैं अपना जिस्म छुपा सकूँ,ना उस को अपने past की याद और ना future की फ़िक्र,अगर फ़िक्र है तो अपने present यानी मौजूदा हालत के दुरुस्त होने की है।

अब past की याद सताएगी

अच्छा !उस के खाने पीने और जिस्म छुपाने का इंतिज़ाम हो गया, उस का present यानी मौजूदा हालत दुरुस्त हो गई,तो अब उस के दिल में क्या ख़्याल आएगा? अब उस के दिल में येह ख़्याल आएगा कि मेरी past यानी गुज़रे हुए ज़माने में लुट जाने वाली दौलत मुझे मिल जाये,जो मुझे नुक़्सान हुआ है उस की भरपाई हो जाये,मेरा खोया हुआ वक़ार,इक़्तिदार,इफ़्तिख़ार,मिल जाये ,मेरा past यानी गुज़रा हुआ ज़माना दुरुस्त हो जाये। सबसे पहले फ़िक्र थी present यानी मौजूदा हालत की,जब वह दुरुस्त हुइ, फ़ौरन past यानी गुज़रे हुए ज़माने की याद सताने लगी।

अब future की याद सताएगी

अच्छा जनाब चलिए,उस का past यानी गुज़रा हुआ ज़माना भी दुरुस्त हो जाये,उस का लुटा हुआ तमाम मालो दौलत, इज़्ज़तो वज़ारत, हुकूमतो सदारत सब वापस मिल जाये,तो अब क्या होगा? अब उस को फ़ौरन अपने future यानी आने वाले ज़माने की याद सताएगी, कि अब मेरा present यानी मौजूदा हालत भी दुरुस्त हो गई,मेरा past यानी गुज़री हुई हालत भी दुरुस्त हो गई,अब मुझे अपने future यानी आने वाले वक़्त को दुरुस्त करना चाहिए। जिन चीज़ों की वजह से मुझे ग़ुर्बतो इफ़्लास की हालत पेश आई थी उनसे बच कर चलना चाहिए ताकि फिर कभी ऐसे हालात ना देखने पड़ें और मैं हमेशा ख़ुशहाल और मालदार रहूँ।

इन्सान की हालत के मुताबिक़ हदीस

आप देखें आदमी को पहले present यानी मौजूदा हालत की फ़िक्र,फिर past यानी गुज़री हुई हालत की फ़िक्र और फिर future यानी आने वाली हालत की फ़िक्र होती है,येह इन्सान की फ़ितरत है,उस की आदत है,अब इसी क़ाएदे और क़ानून को सामने रख कर मेरे नबी,आपके नबी,हमारे नबी,अल्लाह के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी ﷺ की हदीस मुलाहज़ा कीजिए:

जो उम्मती आप पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह पाक उस के लिए दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा और उस के दस दर्जात

बुलंद फ़रमाएगा और उस पर उतनी ही रहमत भेजेगा।

तीनों हालतें दुरुस्त

अल्लाहु अकबर! नेकी के मिलने की बात पहले की,और मिलना येह मौजूदा हालत का दुरुस्त होना है जैसे कि उस कंगाल शख़्स को पहले कुछ मिला, फिर past यानी गुज़रे हुए ज़माने में किए हुए गुनाहों को मिटाने की बात की, और पिछले गुनाह मिटाना, past यानी गुज़रे हुए ज़माने का दुरुस्त होना है,फिर आख़िर में जन्नत के अंदर दर्जात की बुलंदी की बात की,और जन्नत अभी नहीं मिलेगी बल्कि वह तो future यानी आने वाले ज़माने में मिलेगी,लिहाज़ा येह future यानी आने वाले ज़माने का दुरुस्त होना है।

अल्लाहु अकबर! ऐ आशिक़ाने रसूल! क़ुर्बान जाईए ,अल्लाह के आख़िरी नबी,मुहम्मदे अरबी ﷺपर,कि जो आपﷺ पर दुरूदे पाक पढ़ता है,आप पर दुरूद पढ़ने की बरकत से पढ़ने वाले की तीनों हालतें दुरुस्त हो जाती हैं। हमारे नबी ﷺकी कितनी प्यारी हदीस है, तभी तो आला हज़रत लिखते हैं:

मैं निसार तेरे कलाम पर मिली यूँ तो किस को ज़बां नहीं
वह सुख़न है जिसमें सुख़न ना हो वह बयाँ है जिसका बयाँ नहीं

इतना ही नहीं बल्कि और कुछ

और यही नहीं,बल्कि आगे भी फ़रमान मौजूद है, फ़रमाया: अल्लाह पाक उस पर उतनी ही रहमत भेजेगा ।अल्लाहु अकबर! दुरूदे पाक पढ़ने वाले पर रब तआला की कितनी अताएं हैं, कितनी करम नवाज़ियाँ हैं। मेरे आला हज़रत लिखते हैं:

बरसता नहीं देख कर अबरे रहमत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले

अब आई शफ़ाअत की साअत अब आई
ज़रा चैन ले मेरे घबराने वाले

दुरुदे पाक पढ़ लीजिए

क़ल्बे सुन्नी हमेशा कहेगा, आला हज़रत का चर्चा रहेगा
डंका उन का बजा है बजेगा, आला हज़रत का चर्चा रहेगा
आला हज़रत का चर्चा रहेगा

अल्लाह के वलियों के तज़्किरे क्यों बाक़ी रहते हैं?

ऐ आशिक़ाने रज़ा आज की महफ़िल में हम आम तौर से इस मौज़ू पर गुफ़्तगु करेंगे कि औलियाए किराम का चर्चा और ज़िक्र उनकी वफ़ात के बाद भी क्यों बाक़ी रहता है? सदियां गुज़र जाने के बाद भी ज़माना उनकी मनक़बत, उनकी तारीफ़ कर रहा है? और बिल ख़ुसूस इस मौज़ू पर गुफ़्तगु करेंगे कि आला हज़रत का चर्चा क्यों रहेगा? आख़िर क्या वजह है? जिसको देखो वही आला हज़रत,आला हज़रत कर रहा है, मनक़बते रज़ा गुनगुना रहा है, और कह रहा है:

आला हज़रत का चर्चा रहेगा
आला हज़रत का चर्चा रहेगा

हालाँकि एक से बढ़ कर एक बड़े बड़े बादशाह, वज़ीर,अमीर, दानिश वर,बड़े बड़े ताजो तख़्त वाले गुज़रे हैं उनका ज़िक्र कोई नहीं करता, उनकी क़ब्रों पर कोई नहीं जाता,और इधर औलियाए किराम को देखिए कि उनके मज़ारों में मेला लगा हुआ है।

बादशाहों के मक़बरों का हाल

हिन्दुस्तान के बादशाहों में से एक जहांगीर बादशाह भी गुज़रा है,जिसके इशारे पर हिन्दुस्तान की तक़दीर लिखी हुई थी,मगर जब मरा,तो आप उस के मक़बरे को देख लीजिए, जहां आज भी हसरतें बरसती हैं, रात को तो वहां अंधेरा होता ही है, दिन को भी वहां कोई क़ुरआन पढ़ने वाला नहीं मिलता, ताश खेलने वालों की टोलियां तो मिलेंगी, तुम्हें वहां लोग घूमते फिरते तो नज़र आएँगे, लेकिन तुम्हें वहां कोई हाथ उठा कर दुआ मांगता हुआ नज़र नहीं आएगा, येह ऐसे शहन्शाह लोग थे जिनके इशारों पर हिन्दुस्तान की तक़दीर लिखी हुई थी बल्कि जहांगीर की बेटी ज़ैबुन निसा ने एक दीवान लिखा था उस का एक शेअर उस की क़ब्र पर लिखा हुआ है:

बर मज़ारे मा ग़रीबां ना चराग़े ना गुले
ना परे परवाना सोज़द ना सदाए बुलबुले

यानी हम उजड़े हुओं के मज़ारों पर ना ही कोई चराग़ जलता है और ना कोई फूल खिलता है, इसी लिए ना ही परवाना अपना पर जलाता है और ना ही बुलबुल की कोई आवाज़ सुनाई देती है यानी हमारे मज़ार पर वीरानी और हसरतो आस के सिवा कुछ नहीं।

औलियाए किराम की मज़ारों का हाल

अल्लाहु अकबर! ये शहन्शाह और बादशाह लोग हैं जिनका ये हाल है, और उन गुम्बदों को भी तो देखो जिनके लौहे मज़ार पर लिखा है:

गंज बख्शे फ़ैज़े आलम मज़हरे नूरे ख़ुदा
नाकिसां रा पीरे कामिल कामिलां रा रहनुमा

अरे मैगुसारो सवेरे सवेरे
ख़राबात के गिर्द फेरे पे फेरे
किसी दिन इधर से गुज़र कर तो देखो
बड़ी रौनक़ें हैं फ़क़ीरों के डेरे

दिन को चले जाओ या रात को, कड़कती दोपहर में चले जाओ या बरसती बारिश में, छुट्टी का दिन हो या वर्किंग डे हो,वक़्त या ज़माना कोई भी हो, तुम्हारा जब भी वहां जाना होगा, लोगों के सरों का समन्दर नज़र आएगा।

मज़ारे वली की येह शान देखी
हज़ारों की लगती क़तार देखी

येह फ़र्क़ है दुनियादार और दीनदार में,येह फ़र्क़ है शाहान और औलियाए रहमान में,कि वह मर कर मिट गए,और येह मर कर जी गए

तज़्किरे बाक़ी रहने के चंद अस्बाब हैं

वफ़ात के बाद औलियाए किराम के ज़िक्र के बाक़ी रहने के क्या अस्बाब हैं? क्या वजह है कि उनके तज़्किरे उनकी वफ़ात के बाद भी बाक़ी हैं? इस में कौन सा राज़ है?

आज मैं आपको वह अस्बाब, वह वजह और वह राज़ बताऊँगा जिसकी वजह से औलियाए किराम के तज़्किरे होते नहीं बल्कि ख़ूब होगें चुनांचे:

पहला सबब

(1)--- पहला सबब वह जिसका तज़्किरा बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में फरमाने मुस्तफ़ाﷺ की सूरत में मौजूद है, चुनांचे:

औलियाए किराम के चर्चे ज़मीन और आसमान में

हज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूर पुर नूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:जब अल्लाह पाक किसी बंदे से मुहब्बत करता है तो हज़रते जिबरील علیہ السلامको निदा की जाती(यानी फ़रमाया जाता)है कि अल्लाह पाक फ़ुलां बंदे से मुहब्बत रखता है लिहाज़ा तुम भी उस से मुहब्बत करो। हज़रते जिबरील علیہ السلام उस से मुहब्बत करते हैं । फिर हज़रते जिबरील علیہ السلام आसमानी मख़लूक़ में निदा करते (यानी फ़रमाते)हैं कि अल्लाह पाक फ़ुलां बंदे से मुहब्बत फ़रमाता है लिहाज़ा तुम भी उस से मुहब्बत करो, चुनांचे आसमान वाले भी उस से मुहब्बत करने लगते हैं, फिर ज़मीन वालों (के दिलों) में उस की मक़बूलियत रख दी जाती है।

(بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ذکر الملائکة، ۲/ ۳۸۲، حدیث: ۳۲۰۹)

ऐ आशिक़ाने औलिया इस हदीसे पाक से पता चला कि अल्लाह वालों के तज़्किरे ज़मीन पर ही नहीं हो रहे बल्कि आसमानों में भी हो रहे हैं।

मुहब्बत और तारीफ़ में फ़र्क़ है

इस हदीस को सुनकर अगर कोई येह कहे कि ठीक है औलियाए किराम से मुहब्बत करना अच्छी चीज़ है,उनकी मुहब्बत मख़लूक़ के दिल में अल्लाह पाक की जानिब से डाली जाती है हम मानते हैं, मगर लोग उनकी तारीफ़ के पुल बाँधते हैं,उनकी तारीफ़ बढ़ा चढ़ा कर बयान करते हैं,येह तो दुरुस्त नहीं है,मुहब्बत करना और चीज़ है और तारीफ़ बयान करने में मुबालग़ा यानी ज़्यादती करना और चीज़ है, लिहाज़ा ऐसा नहीं होना चाहिए। इस ऐतिराज़ का जवाब भी हदीस में है,आईए कंज़ुल उम्माल की हदीसे पाक सुनिए:

लोग औलियाए किराम का चर्चा करने लगते हैं

दो जहाँ के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर ﷺ का फरमाने आलीशान है: क्या तुम जानते हो कि मोमिन कौन है? मोमिन वह है जो उस वक़्त तक नहीं मरता जब तक कि अल्लाह पाक उस की पसंदीदा बातों से उस के कानों को ना भर दे, अगर कोई बंदा सत्तर मकानात (यानी एक मकान के अंदर दूसरा फिर तीसरा यहां तक कि70) के अंदर अल्लाह पाक से डरे जबकि हर मकान का दरवाज़ा लोहे का हो तो अल्लाह पाक उसे उस के अमल की चादर पहना देता है यहां तक कि लोग उस का चर्चा करने लगते हैं और ज़्यादती से काम लेते हैं। (यानी उस की इबादत को बढ़ा चढ़ा कर बयान करते हैं)सहाबए किराम ने अर्ज़ की कि वह (किसी के अमल में) ज़्यादती कैसे कर सकते हैं? तो शफ़ीअे रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:यक़ीनन मुत्तक़ी अगर अपने पोशीदा अमल में इज़ाफ़ा करने की इस्तिताअत रखता तो ज़रूर करता। (کنزالعمال،کتاب الاخلاق،الحدیث:۵۲۸۶،ج۳،ص۱۴)

तभी तो हम गुनगुनाते हैं

येह है वह सबब जिसकी वजह से मख्लूक़ औलियाए कामिलीन का तज़्किरए दिलनशीन करती ही नहीं बल्कि ख़ूब करती है,कसरत से करती है,और करती रहेगी, तभी तो हम आला हज़रत का तज़्किरा करते हुए कहते हैं:

जो कि अल्लाह के प्यारे वली हैं, हर तरफ धूम उन की मची है
ज़िक्र उनका ना हरगिज़ रुकेगा, आला हज़रत का चर्चा रहेगा

दूसरा सबब

(2)--- दूसरा सबब अल्लाह पाक का वह फ़रमान है जो पारा 2 सूरतुल बक़रा की आयत नंबर 152 में मज़कूर है:“فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ”यानी तुम मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूँगा।

पस इताअत से याद करने वालों को अल्लाह पाक अपनी मग़फ़िरत के साथ, शुक्र के साथ याद करने वालों को अपनी नेअमत के साथ, मुहब्बत के साथ याद करने वालों को अपने क़ुर्ब के साथ याद फ़रमाता है।

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है नबीए करीम ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है: मैं अपने बंदे के गुमान के नज़्दीक होता हूँ जो मुझसे रखे और जब वह मेरा ज़िक्र करता है तो मैं उस के साथ होता हूँ, अगर बन्दा मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उसे अकेला ही याद करता हूँ और अगर वह मुझे मजमे में याद करता है तो मैं उसे बेहतर मजमे में याद करता हूँ और अगर वह बालिश्त भर मेरे क़रीब होता है तो मैं गज़ भर उस से क़रीब हो जाता हूँ और अगर वह गज़ भर मेरे क़रीब होता है तो मैं दोनों हाथों के फैलाओ के बराबर उस से क़रीब हो जाता हूँ और अगर वह चल कर मेरी तरफ़ आता है तो मैं दौड़ कर उस की तरफ़ जाता हूँ (यानी जैसे अल्लाह की शायाँने शान है या मुराद येह है कि अल्लाह की रहमत उस की तरफ़ ज़्यादा तेज़ी से मुतवज्जेह होती है।

(بخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ تعالٰی: ویحذرکم اللہ نفسہ، ۴/۵۴۱، الحدیث: ۷۴۰۵)

तीसरा सबब

(3)---तीसरा सबब येह है कि औलियाए किराम अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना हो जाते हैं,फ़ना फ़िल्लाह की मंज़िल में पहुंच जाते हैं,अपने तन,मन और धन सब कुछ अल्लाह की रिज़ा पर क़ुर्बान कर देते हैं उनका अपना कुछ बाक़ी ही नहीं रहता,उनका जीना मरना अल्लाह के लिए होता है,और जो अल्लाह पाक की ज़ात पर फ़ना हो जाता है उसे बका मिल जाती है, जिस तरह अल्लाह पाक का ज़िक्र हमेशा रहेगा, उसी के फ़ैज़ान से उनका भी ज़िक्र हमेशा होता रहता है और होता रहेगा, निसबत जो उन्हें अल्लाह पाक की ज़ात से हो गई है, मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी अलैहि रहमा अपने नाअतिया दीवान **"दीवाने सालिक"** में लिखते हैं:

तेरी ज़ात में जो फ़ना हुआ, वह फ़ना से नौ का अदद बना
जो उसे मिटाए वह ख़ुद मिटे, वह है बाक़ी उस को फ़ना नहीं

फ़ना हो कर नौ का अदद बन जाता है

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी अलैहि रहमा ने इस शेअर में येह फ़रमा रहे हैं कि जो अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना हो जाता है तो वह फ़ना हो कर नौ का

अदद यानी गिनती बन जाता है,और नौ के अदद को जो भी अदद मिटाने की कोशिश करता है वह ख़ुद मिट जाता है, मसलन कुल अदद नौ हैं:

1 2 3 4 5 6 7 8 9

और यही सारे आदाद की अस्ल हैं,दहाई बनानी है इन्ही से बनेगी,सैकड़ा बनाना है ,इन्ही से बनेगा,हज़ार बनाना है, इन्ही से बनेगा,लाख, करोड़ ,अरब जो भी बनाएँ इन्ही आदाद से बनेंगे ,इनके इलावा कोई और अदद आप नहीं ला सकते।

जो भी अदद नौ को मिटाने आएगा

अब इन आदाद में से जो भी अदद नौ को मिटाने आएगा वह ख़ुद मिट जाएगा,कैसे? वह ऐसे कि जब एक नौ के सामने आया और अपनी सारी ताक़तो क़ुव्वत नौ के सामने रखा, और अपने से नौ को तौलना चाहा,और जब आपने नौ में एक को घटाया तो नौ में सिर्फ इतना फ़र्क़ आया कि वह नौ से आठ बन गया,इसी तरह दो को, फिर तीन को, चार को,पाँच को, छः को, सात को,आठ को, नौ में घटाईए तो नौ बिल्कुल ख़त्म नहीं होगा बल्कि उस का कुछ ना कुछ वुजूद बाक़ी रहेगा मसलन:

(9-1=8) (9-2=7) (9-3=6) (9-4=5)

(9-5=4) (9-6=3) (9-7=2) (9-8=1)

लिहाज़ा नौ को कोई भी अदद ना मिटा सका।

अगर नौ सब को मिटाना चाहे तो

अब अगर नौ सबको मिटाना चाहे तो सिर्फ मिटा ही नहीं देगा बल्कि मुल्के वजूद से मुल्के अदम के कई पर्दों के पीछे पहुंचा देगा यानी उन का वुजूद ही खत्म हो जाएगा, मसलन एक में नौ को घटाईए तो माइनस आठ बचेगा, पस नौ ने एक को अदम के आठ पर्दों के पीछे पहुंचा दिया,इसी तरह दो को अदम के सात पर्दों के पीछे,तीन को छः पर्दों के पीछे,चार को पाँच पर्दों के पीछे,पाँच को चार पर्दों के पीछे,छः को तीन पर्दों के पीछे,सात को दो पर्दों के पीछे,और आठ को अदम के एक पर्दे के पीछे पहुंचा दिया, मिसाल नक़्शे में मुलाहिज़ा कीजिए:

(1-9=-8) (2-9=-7) (3-9=-6) (4-9=-5)

(5-9=-4) **(6-9=-3)** **(7-9=-2)** **(8-9=-1)**

इसी लिए मख्लूक़ औलिया का उर्स मनाती है

पस औलियाए किराम अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना हो कर नौ के अदद की शक्ल इख्तियार कर लेते हैं,जिसकी वजह से फिर उन्हें कोई नहीं मिटा सकता हमेशा बाक़ी रहते हैं इसी लिए मख्लूक़ उनका उर्स मनाती है और मनाती रहेगी, उनकी शान बयान करती है और करती रहेगी,मनक़बत पढ़ती है और पढ़ती रहेगी,आला हज़रत का चर्चा करती है और करती रहेगी।

फ़ैज़े ग़ौसुल वरा भी मिला है, और फैज़ाने ख़्वाजा मिला है
फ़ैज़ का दरिया हर दम बहेगा, आला हज़रत का चर्चा रहेगा

उस का वही अंजाम और हश्र होगा

अब अगर कोई औलियाए किराम के ज़िक्र को मिटाने की कोशिश करेगा,उनसे टकराने की कोशिश करेगा,उनका मुक़ाबला करने की कोशिश करेगा,तो उस का वही अंजाम और हश्र होगा जो दीगर आदाद का हुआ,वह ख़ुद मिट जाएगा, उस का ज़िक्र मिट जाएगा, सिर्फ़ मिट ही नहीं जाएगा, बल्कि अदम के कई पर्दों के पीछे पहुंच जाएगा, और वहां से मुल्के वजूद तक पहुंचना मुश्किल ही नहीं मुश्किल तरीन हो जाएगा।

और जो अदद नौ से मुक़ाबला नहीं करता वही अच्छा रहता है,अगरचे उस में कोई फ़ज़ीलत पैदा नहीं हुई मगर कुछ नुक़्सान भी तो नहीं हुआ।

दुन्यवी लिहाज़ से फ़ायदा में है

पस इसी तरह जो अल्लाह के वलियों से नहीं टकराता, उनसे मुक़ाबला नहीं करता ,वह दुन्यवी लिहाज़ से फ़ायदा में है, और जो अल्लाह के वलियों से टकरा जाता है, उनसे मुक़ाबला करता है, उनसे लड़ाई करता है,उनकी शान में तौहीन करता है तो उस का वही अंजाम और हश्र होता है जो बाक़ी आदाद का नौ से मुक़ाबला करने के बाद होता है,और यही नहीं बल्कि उस से तो अल्लाह पाक भी जंग का ऐलान फ़रमा देता है,चुनांचे बुख़ारी शरीफ़ की हदीसे पाक में है:

जिसने मेरे किसी वली से दुश्मनी रखी

अल्लाह पाक के आखिरी नबी ﷺ का फरमाने आलीशान है कि अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है: जिसने मेरे किसी वली से दुश्मनी रखी मै उस के साथ जंग का ऐलान करूँगा, मेरे किसी बन्दे ने मेरे फ़र्ज़ किए हुए अहकाम की बजा आवरी से ज़्यादा महबूब शैय से मेरा क़ुर्ब हासिल नहीं किया और मेरा बन्दा नवाफ़िल के ज़रीये मेरा क़ुर्ब हासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ, जब मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ तो मैं उस के कान बन जाता हूँ जिनसे वह सुनता है, उस की आँखें बन जाता हूँ जिनसे वह देखता है, उस के हाथ बन जाता हूँ जिनसे वह पकड़ता है और उस के पांव बन जाता हूँ जिनसे वह चलता है, अगर वह मुझसे सवाल करे तो मैं उसे ज़रूर अता फ़रमाता हूँ और अगर किसी चीज़ से मेरी पनाह चाहे तो मैं उसे ज़रूर पनाह अता फ़रमाता हूँ।(صحیح البخاری،کتاب الرقاق،باب التواضع،الحدیث:٦٥٠٢،ص٥٤٥)

औलियाए किराम पर रब की कैसी नवाज़िशात हैं?

अल्लाहु अकबर! अल्लाह पाक की कैसी अताएं, कैसी नवाज़िशात हैं औलियाए किराम पर,तभी तो हम औलियाए किराम से मुहब्बत करते हैं और कहते हैं:

हमको सारे औलिया से प्यार है
इन्शा अल्लाह अपना बेड़ा पार है

और औलिया के पास बैठने के बारे में किसी ने क्या खूब कहा है :

यक ज़माना सोहबते बा औलिया
बेहतर अज़ सद साला ताअते बे रिया

यानी औलियाए किराम की सोहबत में एक लम्हा बैठना सौ साल की ऐसी इबादत से अफ़ज़ल है जो बिगैर रिया के हो।

नौ के अदद की अजीब बातें

अब आगे सुनिए जो अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना हो जाता है वह 9 का अदद ही क्यों बनता है ? इस सवाल का जवाब येह है कि वह नौ का अदद इसलिए बनता है कि नौ के अदद में चार बातें अजीब हैं चुनांचे:

पहली अजीब बात

पहली अजीब बात येह कि एक से आठ तक गिनती लिख लें फिर दोनों किनारों में से एक एक गिनती ले कर जोड़िये तो नौ बन जाएगा मसलन: एक किनारे से 1 लिया और दूसरे किनारे से 8 लिया और दोनों को जोड़ा तो 9 हुआ, फिर एक किनारे से 2 लिया और दूसरे किनारे से 7 लिया और दोनों को जोड़ा तो 9 हुआ, फिर एक किनारे से 3 लिया और दूसरे किनारे से 6 लिया और दोनों को जोड़ा तो 9 हुआ, फिर एक किनारे से 4 लिया और दूसरे किनारे से 5 और दोनों को जोड़ा तो 9 हुआ।

1 2 3 4 5 6 7 8

(1+8=9) (2+7=9) (3+6=9) (4+5=9)

दूसरी अजीब बात

दूसरी अजीब बात येह कि सारे 9 के पहाड़े में हर जगह 9 बनेगा मसलन 9 का पहाड़ा पढ़िए 9 दुना 18, अब 18 के 1 और 8 को जोड़िए तो 9 हुआ, 9 तिरिक 27, अब 27 के 2 और 7 को आपस में जोड़िए तो 9 हुआ इसी तरह बाक़ी को कीजिए। मसलन :(9 x 1=9)इस में 9 है ही

(9 x 2=18)1+8 =9 (9 x 3=27)2+7=9 (9 x 4=36)3+6=9

(9 x 5=45)4+5=9 (9 x 6=54)5+4=9 (9 x 7=63)6+3=9

(9 x 8=72)7+2=9 (9 x 9=81)8+1=9 (9x10=90) इस में 9 है ही

तीसरी अजीब बात

तीसरी अजीब बात येह है कि जिस भी गिनती का पहाड़ा नौ बार करेंगे और उस में आने वाले अदद को आपस में जोड़ेंगे तो जवाब 9 ही आएगा मसलन

12 का पहाड़ा 9 बार पढ़ा तो 108 आया अब 108 में आने वाले अदद 1 और 8 को जोड़ा तो 9 हुआ 1+8=9इसी तरह

13 नौवीं ,117 1+1+7=9

14 नौवीं,126 1+2+6=9 -

जिस भी गिनती का पहाड़ा नौ बार करें और हासिल होने वाली गिनती को जब आपस में मिलाएं तो सब में 9 बनेंगे।

चौथी अजीब बात

चौथी अजीब बात येह है कि नौ का अदद किसी अदद के अंदर नहीं मगर सब अदद नौ के अंदर हैं,मिसाल के तौर पर नौ में आठ भी है, सात भी है,छः भी है,पाँच भी है, चार भी है,तीन भी है, दो भी है और एक भी है। लेकिन एक में नौ नहीं है,दो में नौ नहीं है,तीन में नौ नहीं है,चार में नौ नहीं है,पाँच में नौ नहीं है,छः में नौ नहीं है,सात में नौ नहीं है,आठ में नौ नहीं है।

एक से आठ तक दुनिया वमा फ़ीहा हैं

ऐसा क्यों ? ऐसा इसलिए कि एक से आठ तक दुनिया वमा फीहा हैं यानी दुनिया में जो कुछ मौजूद है,पस जब वली अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना हो कर नौ का अदद बन गया तो उस के अंदर दुनिया वमा फ़ीहा आ गया,अब अगर किसी को दुनिया की कोई भी चीज़ लेनी है वली के पास आओ, उनसे मिलेगी, कि जिस तरह नौ के पास आठ भी है,सात भी है ,छः भी है, पाँच भी है,चार भी है,तीन भी है,दो भी है, एक भी है, इसी तरह वली के पास औलाद भी है,दौलत भी है शोहरत भी है, हुकूमत भी है,सदारत भी है,वज़ारत भी है,इक़्तिदार भी है,इफ़्तिख़ार भी है, बीमारियों की दवा भी है, सेहत भी है, दुनिया की कोई ऐसी चीज़ नहीं जो वली के पास ना हो। अल्लाहु अकबर !

आला हज़रत के पास सब कुछ है

ऐ आशिक़ाने रज़ा! आला हज़रत ने जब अपने आपको अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना कर दिया तो नौ के अदद बन गए, पस आला हज़रत के पास दुनिया भी है और दुनिया के तमाम उलूम भी हैं, किसी ने कहा: आला हज़रत के पास 55 उलूम थे, किसी ने कहा:105उलूम थे, किसी ने कहा:562 उलूम थे, अब मुझे कह लेने दीजिए, ना 55,ना 105,ना 562 बल्कि हक़ येह है कि दुनिया में जितने उलूम बने और बनाए जाऐंगे, वह सब आला हज़रत के पास हैं।

(1) क़ुरआन का इल्म आला हज़रत के पास

(2) क़िराअत का इल्म आला हज़रत के पास

(3) तजवीद का इल्म आला हज़रत के पास

(4) तफ़सीर का इल्म आला हज़रत के पास

(5) हदीस का इल्म आला हज़रत के पास

(6) तख़रीज का इल्म आला हज़रत के पास

(7) फ़िक़्ह का इल्म आला हज़रत के पास

(8) कलाम का इल्म आला हज़रत के पास

(9) अकाइद का इल्म आला हज़रत के पास

(10) बयान का इल्म आला हज़रत के पास

(11) मानी का इल्म आला हज़रत के पास

(12) मुनाज़रा का इल्म आला हज़रत के पास

(13) फ़तवा नवेसी का इल्म आला हज़रत के पास

(14) सीरत निगारी का इल्म आला हज़रत के पास

(15) फ़ल्सफ़ा का इल्म आला हज़रत के पास

(16) मंतिक़ का इल्म आला हज़रत के पास

(17) तंकिदात का इल्म आला हज़रत के पास

(18)फ़ज़ाइलो मनाक़िब का इल्म आला हज़रत के पास

(19) अदब का इल्म आला हज़रत के पास

(20) शायरी का इल्म आला हज़रत के पास

(21) नस्र निगारी का इल्म आला हज़रत के पास

(22) हाशिया निगारी का इल्म आला हज़रत के पास

(23) अस्मा उर्रिजाल का इल्म आला हज़रत के पास

(24) अख़्लाक़ का इल्म आला हज़रत के पास

(25) रूहानियत का इल्म आला हज़रत के पास

(26) तसव्वुफ़ का इल्म आला हज़रत के पास

(27) सुलूक का इल्म आला हज़रत के पास

(28) तारीख़ो सीरत का इल्म आला हज़रत के पास

(29) जदवल का इल्म आला हज़रत के पास

(30) सर्फ़ो नहव का इल्म आला हज़रत के पास

(31) बदीअ का इल्म आला हज़रत के पास

(32) अन्साब का इल्म आला हज़रत के पास

(33) फ़राइज़ का इल्म आला हज़रत के पास

(34) रदात का इल्म आला हज़रत के पास

(35) पनदो नसीहत का इल्म आला हज़रत के पास

(36) मकतूबात का इल्म आला हज़रत के पास

(37) मलफ़ूज़ात का इल्म आला हज़रत के पास

(38) ख़ुतबात का इल्म आला हज़रत के पास

(39) जोग़राफ़िया का इल्म आला हज़रत के पास

(40) तिजारत का इल्म आला हज़रत के पास

(41) शुमारियात का इल्म आला हज़रत के पास

(42) सौतियात का इल्म आला हज़रत के पास

(43) मालियात का इल्म आला हज़रत के पास

(44) इक़्तिसादीयात का इल्म आला हज़रत के पास

(45) मुआशरत का इल्म आला हज़रत के पास

(46) तबइयात का इल्म आला हज़रत के पास

(47) मआशियात का इल्म आला हज़रत के पास

(48) हैअत का इल्म आला हज़रत के पास

(49) कीमिया का इल्म आला हज़रत के पास

(50) मादीनियात का इल्म आला हज़रत के पास

(51) फ़लकियात का इल्म आला हज़रत के पास

(52) नुजूम का इल्म आला हज़रत के पास

(53) जफ़र का इल्म आला हज़रत के पास

(54) अर्ज़ियात का इल्म आला हज़रत के पास

(55) तालीमो ताअल्लुम का इल्म आला हज़रत के पास

(56) हिसाब का इल्म आला हज़रत के पास

(57) ज़िजात का इल्म आला हज़रत के पास

(58) ज़ाइरचह का इल्म आला हज़रत के पास

(59) तावीज़ात का इल्म आला हज़रत के पास

(60) तिब्ब का इल्म आला हज़रत के पास

(61) अदवियात का इल्म आला हज़रत के पास

(62) लिसानियात का इल्म आला हज़रत के पास

(63) रस्मुल ख़त का इल्म आला हज़रत के पास

(64) जरहो तादील का इल्म आला हज़रत के पास

(65) विर्दो अज़्कार का इल्म आला हज़रत के पास

(66) ईमानियात का इल्म आला हज़रत के पास

(67) तक़सीर का इल्म आला हज़रत के पास

(68) तौक़ीत का इल्म आला हज़रत के पास

(69) औफ़ाक का इल्म आला हज़रत के पास

(70) रियाज़ी का इल्म आला हज़रत के पास

(71) बैंक कारी का इल्म आला हज़रत के पास

(72) ज़राअत का इल्म आला हज़रत के पास

(73) तारीख़ गोई का इल्म आला हज़रत के पास

(74) सियासियात का इल्म आला हज़रत के पास

(75) औकात का इल्म आला हज़रत के पास

(76) रद्दे मूसिक़ी का इल्म आला हज़रत के पास

(77) क़ानून का इल्म आला हज़रत के पास

(78) तशरीहात का इल्म आला हज़रत के पास

(79) तहक़ीक़ात का इल्म आला हज़रत के पास

(80) अदयान का इल्म आला हज़रत के पास

(81) माहौलियात का इल्म आला हज़रत के पास

(82) अय्याम का इल्म आला हज़रत के पास

(83) ताबीर का इल्म आला हज़रत के पास

(84)अरूज़ो कवाफी का इल्म आला हज़रत के पास

(85) बहरो बर का इल्म आला हज़रत के पास

(86) औज़ान का इल्म आला हज़रत के पास

(87) हिक्मत का इल्म आला हज़रत के पास

(88) नक़दो नज़र का इल्म आला हज़रत के पास

(89) तालीकात का इल्म आला हज़रत के पास

(90) मौसमियात का इल्म आला हज़रत के पास

(91) शहरीयात का इल्म आला हज़रत के पास

(92) मंज़र बयानी का इल्म आला हज़रत के पास

(93) नफ़सियात का इल्म आला हज़रत के पास

(94) सहाफ़त का इल्म आला हज़रत के पास

(95) अमवाल का इल्म आला हज़रत के पास

(96) अमलीयात का इल्म आला हज़रत के पास

(97) अहकाम का इल्म आला हज़रत के पास

(98) नूर का इल्म आला हज़रत के पास

(99) मा बादत्तबईआत का इल्म आला हज़रत के पास

(100) इमरानियात का इल्म आला हज़रत के पास

(101) रमल का इल्म आला हज़रत के पास

(102) लुग़त का इल्म आला हज़रत के पास

(103) इस्तिआरा का इल्म आला हज़रत के पास

(104) हयातियात का इल्म आला हज़रत के पास

(105) नबातात का इल्म आला हज़रत के पास

बल्कि हक़ तो येह है कि आला हज़रत उलूम की मशीन थे, जिसमें किसी भी इल्म का सवाल किसी भी ज़बान में डाल दीजिए,और चंद मिनट के बाद उस का सही जवाब हासिल कर लीजिए, चुनांचे:

बारगाहे मुस्तफ़ाﷺ से ऐसी मशीन अता हुई है

तजल्लियाते इमाम अहमद रज़ा नामी किताब के सफ़ा नंबर 78 में लिखा है एक दफ़ा ख़लीफ़ए आला हज़रत, हज़रत अल्लामा मौलाना अल्हाज शाह मुहम्मद हिदायत रसूलرحمۃاللہعلیہऔर दीगर उलमाए किराम आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ानرحمۃاللہعلیہकी बारगाह में हाज़िर थे, दुनिया की मशीनों की ईजाद का तज़्किरा हो रहा था, इस पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ानرحمۃاللہعلیہने इरशाद फ़रमाया अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से बारगाहे मुस्तफा ﷺ से मुझे ऐसी मशीन अता हुई है, जिसमें किसी भी इल्म का सवाल किसी भी ज़बान में डाल दीजिए,चंद मिनट के बाद उस का सही जवाब हासिल कर लीजिए ।मौलाना हिदायत रसूल साहिबرحمۃاللہعلیہने अर्ज़ की:हुज़ूर वह मशीन(Machine) मुझे भी दिखा दीजिए।तो इमाम अहले सुन्नतرحمۃ اللہ علیہने इरशाद फ़रमाया:फिर किसी मौक़ा पर देख लीजिएगा। लेकिन उन्होंने क़दमों को पकड़ लिया और मचल गए कि हुज़ूर!हम तो उस मशीन को अभी देखेंगे।तो आला हज़रतرحمۃاللہعلیہने अपने सामने के बटन खोल दिए और अपने सीनए अनवर की ज़ियारत करवाई फिर फ़रमाया:येह वह मशीन है, जिसके बारे में,मैंने कहा था, शाह हिदायत रसूल साहिबرحمۃاللہعلیہआला हज़रतرحمۃ اللہعلیہ के सीनए अनवर को चूमते थे और फ़रमाते थे: ऐ रसूले करीमﷺ के उलूम के वारिस और उन के नाइब आपने सच कहा।(تجلیاتِ امام احمد رضا، ص ۷۸ ملخصاً)

तभी तो मेरे पीरो मुर्शिद,आशिक़े आला हज़रत,अमीरे अहले सुन्नत, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादरी रज़वी लिखते हैं:

इल्म का चश्मा हुआ है मोजज़न तहरीर में
जब क़लम तूने उठाया ऐ इमाम अहमद रज़ा

ऐ इमामे अहले सुन्नत नाइबे शाहे उमम
कीजिए हम पर भी साया ऐ इमाम अहमद रज़ा

एक और शायर लिखता है:

वादी रज़ा की कोहे हिमाला रज़ा का है
जिस सम्त देखिए वह इलाक़ा रज़ा का है
अगलों ने भी लिखा है बहुत दीन पर मगर
जो कुछ है इस सदी में वह तन्हा रज़ा का है

और सौ बातों की एक बात,कि अगर किसी को आला हज़रतرحمۃ اللہ علیہके इल्म को जाँचना हो तो वह आला हज़रतرحمۃ اللہ علیہकी लिखी हुई किताबें पढ़ ले उस को पता चल जाएगा कि आला हज़रतرحمۃ اللہ علیہकिस शख़्सियत का नाम है। शायर लिखता है :

मीनारे कसरे रज़ा तो बुलंद काफ़ी है
तुम उस के पहले ही ज़ीने पे चढ़ के दिखला दो
फतवए रज़वीयह तो इक करामत है
ज़रा हदाइक़े बख़्शिश ही पढ़ के दिखला दो

आला हज़रतرحمۃ اللہ علیہ फ़ना फ़िल्लाह और फ़ना फ़िर्रसूल दोनों थे।चुनांचे:

अगर कोई मेरे दिल के दो टुकड़े कर दे

मेरे आक़ा आला हज़रतرحمۃ اللہ علیہफ़रमाते हैं अगर कोई मेरे दिल के दो टुकड़े कर दे तो एक पर ला इलाहा इल्लल्लाह और दूसरे पर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह लिखा हुआ पाएगा। (سوانح امام احمد رضا ص۹۶ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر)

ताजदारे अहले सुन्नत, शहज़ादए आला हज़रत, हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिंद, मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ानرحمۃ اللہ علیہसामाने बख़्शिश में फ़रमाते हैं:

ख़ुदा एक पर हो तो इक पर मुहम्मद
अगर क़ल्ब अपना दो पारा करूँ मैं

ख़ुदा ख़ैर से लाए वह दिन भी नूरी
मदीने की गलियाँ बुहारा करूँ मैं

सोने का अंदाज़

जो अल्लाह व रसूल की ज़ात में फ़ना हो जाता है उस की हर हर अदा से अजीबो ग़रीब चीज़ें सादिर होती हैं जिनको देख और सुन कर अक़्ल वालों की अक़्ल दंग रह जाती है।आला हज़रतرحمۃ اللہ علیہ की उन्हीं अजीबो ग़रीब चीज़ों में से एक येह भी है कि आप सोते वक़्त हाथ के अंगूठे को शहादत की उंगली पर रख लेते ताकि उंगलियों से लफ़्ज़ अल्लाह बन जाये। यूँही आपرحمۃ اللہ علیہपांव फैला कर कभी ना सोते बल्कि दाहिनी यानी सीधी करवट लेट कर दोनों हाथों को मिला कर सर के नीचे रख लेते और पांव मुबारक समेट लेते, इस तरह जिस्म से लफ़्ज़े मुहम्मद बन जाता।(حیاتِ اعلیٰ حضرت ج ۱ ص ۹۹ وغیرہ)

येह हैं अल्लाह पाक के चाहने वालों और रसूले पाकﷺ के सच्चे आशिकों की अदाऐं।

नामे ख़ुदा है हाथ में नामे नबी है ज़ात में
मुहरे ग़ुलामी है पड़ी लिखे हुए हैं नाम दो

आला हज़रत के फ़ना फ़िर्रसूल होने की दलील

ऐ आशिक़ाने रज़ा! और रही बात आला हज़रतرحمۃ اللہ علیہके फ़ना फ़िर्रसूल होने की, तो इस की दलील येह है कि आपرحمۃ اللہ علیہने हुज़ूर ताजदारे रिसालत ﷺकी इताअतो ग़ुलामी को दिलो जान से क़बूल कर लिया था। और इस में मरतबए कमाल को पहुंचे हुए थे, उस का इज़हार आपرحمۃ اللہ علیہने एक शेअर में इस तरह फ़रमाया:

उन्हें जाना उन्हें माना ना रखा ग़ैर से काम
लिल्लाहिल हम्द मैं दुनिया से मुस्लमान गया

बादशाहों की ख़ुशामद से इज्तिनाब

आपرحمة الله عليهने कभी किसी दुन्यवी ताजदारों की ख़ुशामद के लिए क़सीदा नहीं लिखा, बादशाहों की ख़ुशामद से इज्तिनाब फ़रमाते यानी बचते थे।एक मर्तबा रियासत नानपारा ज़िला बहराइच यूपी हिंद के नवाब की तारीफ़ में शायरों ने क़साइद लिखे। कुछ लोगों ने आपرحمة الله عليهसे भी गुज़ारिश की कि हज़रत आप भी नवाब साहब की तारीफ़ में कोई क़सीदा लिख दें। आपرحمة الله عليهने इस के जवाब में एक नात शरीफ़ लिखी जिसका मतलअ येह है:

वह कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्स जहां नहीं
यही फूल ख़ार से दूर है यही शम्आ है कि धुवां नहीं

अपने आक़ाﷺके इश्क़ में ऐसे फ़ना थे

अपने आक़ा के इश्क़ में ऐसे फ़ना थे कि आप का तन,मन,धन,दिल जिगर,होशो ख़िरद सब आक़ाﷺ के दरबार में हाज़िर रहता था, ख़ुद फ़रमाते हैं:

अरे ऐ ख़ुदा के बंदो कोई मेरे दिल को ढूंढ़ो
मरे पास था अभी तो अभी क्या हुआ ख़ुदाया
ना कोई गया ना आया

फिर ख़ुद ही जवाब देते हुए कहते हैं:

हमें ऐ रज़ा तेरे दिल का पता चला ब मुश्किल
दरे रौज़ा के मुक़ाबिल वह हमें नज़र तो आया
येह ना पूछ कैसा पाया

अंदाज़ ही अलग था,जो बयान करने के काबिल नहीं है,कैफ़ीयत ही कमाल की है,जिसका जवाब ही नहीं है।फिर ख़ुद ही अपने दिल की कैफ़ीयत बयान करते हुए लिखते हैं:

कभी ख़ंदा ज़ेरे लब है कभी गिर्या सारी शब है
कभी गम कभी तरब है ना सबब समझ में आया
ना उसी ने कुछ बताया

कभी ख़ाक पर पड़ा है सरे चर्ख़ ज़ेरे पा है
कभी पेशे दर खड़ा है सरे बंदगी झुकाया
तो क़दम में अर्श पाया

आला हज़रतرحمة الله عليهका इश्क़े रसूल और इश्क़े मदीना कमाल दर्जे का था, हर वक़्त मदीने की याद में डूबे रहते और ऐसा क्यों ना हो कि एक मक़ाम पर ख़ुद को मुख़ातब कर के फ़रमाते हैं:

जानो दिल होशो खिरद सब तो मदीने पहुंचे
तुम नहीं चलते रज़ा सारा तो सामान गया

हर वक़्त नबीﷺ की तारीफ़

हर वक़्त नबीﷺ की बातें,हर लम्हे उन्हीं की यादें,और ऐसा क्यों ना हो कि:

सनाए सरकार है वज़ीफ़ा क़बूले सरकार है तमन्ना
ना शायरी की हवस ना पर्वा रदी थी क्या कैसे क़ाफ़िए थे

आला हज़रतرحمة الله عليهने सारी ज़िंदगी मुस्तफ़ाﷺ की तारीफ़ो तौसीफ़ में गुज़ार दी,और मिदहते मुस्तफ़ाﷺ में रतबुल लिसान रहे, कभी मुस्तफ़ाﷺ की तारीफ़ में अर्ज़ करते हैं:

सरवर कहूं कि मालिको मौला कहूं तुझे
बागे ख़लील का गुले ज़ेबा कहूं तुझे
तेरे तो वस्फ़ ऐबे तनाही से हैं बरी
हैराँ हूँ मेरे शाह मैं क्या क्या कहूं तुझे
कह लेगी सब कुछ उन के सना ख़्वाँ की ख़ामोशी
चुप हो रहा है कह के मैं क्या क्या कहूं तुझे
लेकिन रज़ा ने ख़त्मे सुख़न इस पे कर दिया
ख़ालिक़ का बन्दा ख़ल्क़ का आक़ा कहूं तुझे

और वज्द में आकर बारगाहे रिसालतﷺमें अर्ज़ करते हैं:मेरे आक़ा!ﷺ कायनात और इस में मौजूद तमाम चीज़ों को आप ही की ख़ातिर पैदा किया गया

है,हमारी ज़बानें,हमारी ज़िंदगियां,हमारा इस दुनिया में आना सब आप ही के करम का सदक़ा है और क़ियामत के दिन भी इन्शा अल्लाह आप ही की शाने यकताई देखने के लिए उठेंगे। कि :

दहन में ज़बां तुम्हारे लिए बदन में है जां तुम्हारे लिए
हम आए यहां तुम्हारे लिए उठें भी वहां तुम्हारे लिए

सबा वह चले कि बाग़ फले वह फूल खिले कि दिन हों भले
लिवा के तले सना में खुले रज़ा की ज़बां तुम्हारे लिए

आला हज़रत वाक़ेई में फ़ना फ़िर्रसूल थे

मशाइख़े ज़माना की नज़रों में आपرحمۃ اللہ علیہवाक़ेई फ़ना फ़िर्रसूल थे। अक्सर फ़िराक़े मुस्तफ़ा में ग़मगीन रहते और सर्द आहें भरा करते। पेशा वर गुस्ताखों की गुस्ताख़ाना इबारात को देखते तो आँखों से आँसूओं की झड़ी लग जाती और प्यारे मुस्तफ़ा की हिमायत में गुस्ताखों का सख़्ती से रद्द करते ताकि वह झुंझला कर आप को बुरा कहना और लिखना शुरू कर दें। आप अक्सर इस पर फ़ख्र किया करते कि अल्लाह पाक ने इस दौर में मुझे नामूसे रिसालत के लिए ढाल बनाया है। और वह यूँ कि मैं बदगोइयों का सख़्ती और तेज़ कलामी से रद्द करता हूँ कि इस तरह वह मुझे बुरा भला कहने में मसरूफ़ हो जाएं। उस वक़्त तक के लिए आक़ाए दो जहाँﷺ की शान में गुस्ताख़ी करने से बचे रहेंगे।हदाइक़े बख्शिश शरीफ़ में फ़रमाते हैं:

करूँ तेरे नाम पे जां फ़िदा ना बस एक जां दो जहाँ फ़िदा
दो जहाँ से भी नहीं जी भरा करूँ क्या करोड़ों जहाँ नहीं

दौराने मीलाद बैठने का अंदाज़

मेरे आका आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ानرحمۃ اللہ علیہ मीलाद शरीफ़ की महफ़िल में ज़िक्रे विलादत शरीफ़ के वक़्त सलातो सलाम पढ़ने के लिए खड़े होते बाक़ी शुरू से आखिर तक अदबन दो ज़ानू बैठे रहते। यूँही वअज़ फ़रमाते,चार पाँच घंटे कामिल दो ज़ानू ही मिम्बर शरीफ़ पर रहते।(حیاتِ اعلیٰ حضرت ج۱ص۹۸)

काश! हम ग़ुलामाने आला हज़रत को भी कुरआन की तिलावत करते या सुनते वक़्त नीज़ इज्तिमाए ज़िक्रो नात, सुन्नतों भरे इज्तिमाआत,मदनी मुज़ाकरात,

दर्स और मदनी हलक़ों वग़ैरा में अदबन दो ज़ानू बैठने की सआदत मिल जाये।

तआरूफ़े आला हज़रत

विलादत बा सआदत

आला हज़रत की विलादते बा सआदत बरेली शरीफ़ के महल्ला जसूली में 10शव्वाल1272 हिज्री बरोज़ हफ़्ता बवक़्ते ज़ोहर बमुताबिक़14जून1856 ईस्वी को हुई।(حیاتِ اعلیٰ حضرت ج۱ص۵۸ مکتبۃ المدینہ)

आप का पैदाइशी नाम “मुहम्मद” है, आपकी वालिदा माजिदा मुहब्बत में “अम्मन मियां” फ़रमाया करती थीं, वालिद माजिद और दीगर अइज़्ज़ा “अहमद मियां” के नाम से पुकारा करते। आप के दादा ने आप का नाम “अहमद रज़ा” रखा। और आप का तारीख़ी नाम अलमुख़्तार है जबकि कुन्नियत अबू मुहम्मद है और आला हज़रत ख़ुद अपने नाम से पहले “अब्दुल मुस्तफ़ा” लिखा करते थे।

(تجلیاتِ امام احمد رضا، ص۲۱)

इस से आप की सरकारे दो आलम से सच्ची मुहब्बत और ग़ुलामी का अंदाज़ा होता है चुनांचे अपने नाअतिया दीवान हदाइक़े बख़्शिश में एक जगह फ़रमाते हैं

ख़ौफ़ ना रख रज़ा ज़रा, तू तो है अब्दे मुस्तफ़ा
तेरे लिए अमान है, तेरे लिए अमान है

अल्क़ाबात

आला हज़रत के बेशुमार अलक़ाबात हैं,जिनमें से आपका मशहूर तरीन लक़ब "आला हज़रत" है ।और येह लक़ब आपकी ज़ात के साथ इस तरह ख़ास है कि जब भी आला हज़रत कहा, सुना जाता है, ज़ेहन फ़ौरन आप की तरफ़ ही जाता है। उलमाए अहले सुन्नत आपको और भी बे शुमार अलक़ाबात से याद करते हैं। आशिक़े आला हज़रत, शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत,बानिये दावते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी अपने रिसाले

“तज़्किरा इमाम अहमद रज़ा” में आला हज़रत का ज़िक्रे ख़ैर बारह अलक़ाबात के साथ फ़रमाया है।

हुल्या मुबारक

आप के भतीजे मौलाना हसनैन रज़ा ख़ान आला हज़रत के जमाले मुबारक का नक़्शा खींचते हुए कुछ यूं फ़रमाते हैं:इब्तिदाई उम्र में आपका रंग चमकदार गंदुमी था,चेहरा मुबारक पर हर चीज़ निहायत मौज़ूं व मुनासिब थी, बुलंद पेशानी, नाक मुबारक पतली और ख़ुशनुमा थी, दोनों आँखें बहुत ख़ूबसूरत थीं, निगाह में क़दरे तेज़ी थी, दाढ़ी बड़ी ख़ूबसूरत थी, सर मुबारक पर ज़ुल्फ़ें कान की लौ तक थीं, सर मुबारक पर हमेशा अमामा शरीफ़ सजा रहता था, आप का सीना मुबारक बावजूद कमज़ोरी के ख़ूब चौड़ा महसूस होता था,गर्दन सुराही दार और बुलंद थी,आपका क़द दरमियाना था,हर मौसम में सिवाए मौसमी लिबास के आप सफ़ैद कपड़े ही ज़ेबे तन फरमाते, आप की आवाज़ निहायत पुर दर्द थी और किसी क़दर बुलंद भी थी, जब अज़ान देते तो सुनने वाले हमा तन गोश हो जाते, आपने हमेशा हिन्दुस्तानी जूता पहना जिसे सलीम शाही जूता भी कहते हैं,आपकी रफ़्तार ऐसी नरम कि बराबर के आदमी को भी क़दमों की चाप महसूस ना होती थी।

(مجد د اسلام از علامہ نسیم بستوی مطبوعہ لاہور ص ۳۲، ۳۳، بتغیر)

लेकिन कमाल येह कि हमेशा नज़रें नीची रखते थे। कभी किसी की आँखों में आँखें डाल कर ना देखते।

(امام احمد رضا اور ردِ بدعات و منکرات از یسن اختر مصباحی مطبوعہ فرید بک سٹال لاہور ص ۲۰۰ از فیضانِ اعلیٰ حضرت، ص ۸۴)

दुआ

अल्लाहुर्रहमान,की बारगाहे आलीशान, में बन्दए नाक़िसो नातमाम, बइजज़ो एहतिराम, ब वासिलए सरवरे ज़ीशान,अर्ज़ गुज़ार है कि रब्बे करीम हमें नारे जहीम, से नजात अता करे, और औलियाए कामिलीन की ग़ुलामिए दिलनशीन में इस्तिक़ामत अता फ़रमाए,फैज़ाने आला हज़रत से माला माल फ़रमाए। आज की महफ़िल में किए जाने वाले तमाम आमाले हसना का सवाब आला हज़रत की रूहे पाक को अता फ़रमाए। आमीन बिजाहिन्नबीइल अमीनﷺ

तरीखे तकमील

29 sep 2021

बरोज़ बुध

मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
मुदर्रिस जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीके अकबर
ताज नगरी फेस 2 ताज गंज आगरा उत्तर प्रदेश हिंद 282001

मन्क़बते आला हज़रत

क़ल्बे सुन्नी हमेशा कहेगा, आला हज़रत का चर्चा रहेगा
डंका उन का बजा है बजेगा, आला हज़रत का चर्चा रहेगा

जो कि अल्लाह के प्यारे वली हैं, हर तरफ धूम उन की मची है
ज़िक्र उनका ना हरगिज़ रुकेगा आला हज़रत का चर्चा रहेगा

उनकी तारीफ़ करते रहेंगे, उन पे मरते हैं मरते रहेंगे
उनका दीवाना कैसे मिटेगा आला हज़रत का चर्चा रहेगा

फ़ैज़े ग़ौसुल वरा भी मिला है, और फैज़ाने ख़्वाजा मिला है
फ़ैज़ का दरिया हर दम बहेगा, आला हज़रत का चर्चा रहेगा

हैं नक़ी ख़ान के वो दुलारे और उल्मा के बेशक वो प्यारे
कोई उन सा बना ना बनेगा, आला हज़रत का चर्चा रहेगा

इशक़ो उल्फ़त का नारा लगाया, आज बेख़ुद जो मैंने सुनाया
ये तराना ज़माना पढ़ेगा, आला हज़रत का चर्चा रहेगा

वसीम बेखुद माण्डलवी

माण्डल जिला भीलवाड़ा राजस्थान